दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

Mentorship Program
Mukherjee Nagar

टेस्ट-3

(प्रश्न पत्र-II)

DTVF
OPT-24 **HL-2403**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक : 250 *Maximum Marks : 250*

नाम (Name): KARMVEER NARWADIA

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ [✓] नहीं [ ]

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____ _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 3/ 28 July 2024

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2024] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2024]:

0	8	0	5	5	9	6

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): _____ टिप्पणी (Remarks): _____

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

खण्ड - क

1. निम्नलिखित पद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये:

10 × 5 = 50

(क) बरु वै कुब्जा भलो कियो।
सुनि सुनि समाचार ऊधौ मो कछुक सिरात हियो।।
जाको गुन, गति, नाम, रूप, हरि हार्‌यो, फिरि न दियो।
तिन अपनो मन हरत न जान्यो हँसि हँसि लोग जियो।।
सूर तनक चंदन चढ़ाय तन ब्रजपति बस्य कियो।
और सकल नागरि नारिन को दासी दाँव लियो।।

प्रस्तुत पद्यांश सूरदास के भ्रमरगीत से लिया गया है। सूरदास कृष्णभक्ति काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं।

गोपियाँ कृष्ण के विरह मे कुब्जा पर व्यंग्य खींच रही हैं।

गोपियाँ कहती हैं, उद्धव ने समाचार मे बताया कि कृष्ण ने कुब्जा का भला किया। ~~श्री कृष्ण~~ गुण, गति, नाम, रूप के मालिक हैं जो उन्होंने कुब्जा को प्रदान किया। (जैसे महिला पर लोग हँसते थे। वह आज चंदन का तिलक लगाकर मथुरा मे रह रही है। वह नारी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नगर की रानी बनकर घूम रही हैं जो नगर की दासी बनने लायक थी।

निरोध

(1) उपालंभ काव्य का भाव दिखता है।

(2) भाव प्रेरित वक्रता का प्रयोग हुआ है।

(3) नागरता को दिखाया गया है।

(4) ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) न मिटै भवसंकट, दुर्घट है तप, तीरथ जन्म अनेक अटो।
कलि में न बिराग, न ज्ञान कहूँ, सब लागत फोकट झूँठ जटो।
नट ज्यों जनि पेट-कुपेटक कोटिक चेटक कौतुक ठाट ठटो।
तुलसी जो सदा सुख चाहिय तौ, रसना निसिबासर राम रटो।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत पद्यांश तुलसीदास की कवितावली रचना से उद्धृत है जिसमे कलियुग से संबधित विचारों को बताया गया है तुलसीदास ने रामराज्य तथा कलियुग को रचना मे शामिल किया है।

तुलसी कहते है कलियुग मे न तो संकट मिट रहा है न ही कोई तप हो रहा है, नही ज्ञान है। सब कुछ झूठ लग रहा है। कोई ज्ञान लेना ही नही चाहता। सब लोग एक शोषणवादी व्यवस्था से पीड़ित हैं। इस व्यवस्था मे दुख ही दुख विद्यमान है। तुलसीदास को तो सुख चाहिए जिसके लिए राम-राम के नाम का जप करना होगा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(1) ब्रज भाषा का प्रयोग किया है।

(2) तिभावना अलंकार है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) नैना नीझर लाइया, रहट बहै निस जाम।
पपीहा ज्यूँ पिव पिव करौं, कबरु मिलहुगे राम।

प्रस्तुत पद्यांश कबीर के काव्य से लिया गया है।

इन पंक्तियों मे कबीर निर्गुण राम की आराधना कर रहे हैं कि वे उनका उद्धार करे।

कबीर कहते हैं कि मेरी आंखे अब दुख रही है आप अपने निज धाम को छोड़ कर आओ। जिस तरह पपीहा करता है उस तरह कर रहा हूं, अब तो मेरा उद्धार करोगे। आप मुझे कब मिलोगे।

विशेष

(1) राम की निर्गुण भक्ति को दिखाया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ii) ब्रज भाषा का प्रयोग किया है।

(iii) भक्ति भावना समाहित है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) हाथ जिसके तू लगा,
पैर सर रखकर वो पीछे को भगा
औरत की जानिब मैदान यह छोड़कर,
तबेले को टट्टू जैसे तोड़कर,
शाहों, राजों, अमीरों का रहा प्यारा
तभी साधारणों से तू रहा न्यारा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत पंक्तियाँ निराला की कुकुरमुत्ता से लिया गया है जिसमे कुकुरमुत्ता तथा गुलाब का संवाद दिखाया गया है जिसमे प्रगतिवाद की भाषा जो अच्छा है, वह गलत ही होगा पर कटाक्ष किया है।

पंक्तियों मे कुकुमुत्ता गुलाब को कहता है तुम जिसके हाथ मे आए वह तुम्हे लेकर भागा। चाहे कैसी भी परिस्थितियों मे रहे। चाहे राजा, अमीरो का प्यारा रहा, तुम सदा अमीर लोगो के लिए प्यारा रहे। वे इसमें गुलाब को कुकुमुत्ता के माध्यम से उसकी विशेषताओ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को बताया है।)

विरोध

(1) गुलाब का साधारीकरण किया है।

(2) बिम्बधर्मी भाषा का प्रयोग हुआ है।

(3) अंग्रेजी भाषा का प्रयोग हुआ है।

(4) खड़ी भाषा का काव्य है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) तुम सभ्य हो, 'मार्केट' जिनका सात सागर पार है,
पर ग्राम की वह हाट ही उनका 'बड़ा बाज़ार' है।
तुम हो विदेशों से मँगाते माल लाखों का यहाँ,
पर वे अकिंचन नमक-गुड़ ही मोल लेते हैं वहाँ।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत पंक्ति गुप्त जी की भारत-भारती से ली गई हैं जिसकी रचना 1912 में की गई थी।

भारत-भारती मे अतीत का विश्लेषण, वर्तमान की समस्याओं का चित्रण तथा भविष्य के प्रति आशावादी दिखाया गया है। इसमें वे आयात-निर्यात व्यवस्था पर व्यंग्य करते है।

~~शुक्ल जी~~ गुप्त जी कहते है तुम अच्छे हो जिनका बाजार सात समुद्र पार है। लेकिन यही वह ग्रामीण हाट ही उनका बड़ा बाजार है। अर्थात् अपने ग्रामीण हाट से वस्तुएँ ले जाकर वे महंगी कर वस्तुएँ बेच रहे है। जिस वस्तु मे

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हम विदेशों से लाखों में मँगवाते हैं. वह यहाँ गुड़-चीनी के भाव बिक जाएगी। अर्थात् हमारा धन बहिर्गमित हो रहा है।

विशेष

(1) नवजागरण का बोध दिखता है.

(2) धन बहिर्गमन गरीबी की अवस्था से पंक्तियाँ मेल खाती है.

(3) खड़ी बोली का प्रयोग किया है.

(4) समासने योग्य भाषा का प्रयोग है.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) पद्मावत में इतिहास और कल्पना की सह-उपस्थिति पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'बिहारी' की बहुज्ञता पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) क्या कबीर की काव्य-भाषा काव्यात्मकता की कसौटी पर खरी उतरती है? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) "कबीर की वाणी वह लता है जो योग के क्षेत्र में भक्ति का बीज पड़ने से अंकुरित हुई है।" इस मत के परिप्रेक्ष्य में कबीर के काव्य का अनुशीलन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कबीर की साधना पद्धति संश्लिष्ट है जिसकी शुरुआत योगमार्ग से हुई, कहीं कहीं ज्ञान मार्ग को छुआ लेकिन परिणति भक्ति मार्ग मे हुई। तभी आचार्य द्विवेदी ने कहा है कबीर की वाणी वह लता है जो योग के क्षेत्र मे भक्ति का बीज पड़ने से अंकुरित हुई है।

वस्तुतः कबीर का समय योग तथा भक्ति के चरम संघर्ष का काल था। कबीर की शुरुआत योग मार्ग से हुई जिसमे अक्खड़ता शामिल थी, वही भक्ति में दैन्य-विनय, योग में प्रचण्ड आत्मविश्वास होता है, वही भक्ति मे आवेग तथा सहृदय विकास की। योगी भक्त मार्ग को निर्बल तथा दुर्बल समझते थे। भक्त योग मार्ग को कठोर तथा निरर्थक समझते थे।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कबीर की इसी प्रारम्भिक साधना के कारण उनकी वाणी में अक्खड़ता तथा प्रमाणिकता आती है। वे योग मार्ग का सम्मान करते हैं क्योंकि यह विषमता का विरोध करता है तथा समानता की स्थापना करता है, साथ ही धार्मिक आडम्बरों का विरोध करता है। इसी कारण जब योगमार्गी के अनुसार कुण्डलिनी से सहस्रार तक कबीर चले गए तब आंखे खुली तो कुछ नहीं हुआ तब वे कहते हैं-

> गगना पवना दोनो बिनसे
> कहँा गया जोग तुम्हारा

इस बिन्दु पर आकर रति भक्त कवि की तरह पर्यवसित हो जाते है। हालांकि वे कहते हैं

> पकरी टेक कबीर भगति की
> काजी रहे झख मारि

इसके बाद कबीर ने भक्ति का पथ

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पथ ज्यो का त्यों नही स्वीकार नही किया। क्योंकि वहाँ अनेक आडम्बर तथा कुरीतियाँ युक्त थी। इसने निर्गुण राम की आराधना की। धार्मिक प्रथाओं पर व्यंग्य उनके प्रसिद्ध है। यह व्यंग्य योग परम्परा की अक्खड़ता के परिणाम हैं:

"पाहन-पत्थर जोडि कै मस्जिद लई बनाय
ता ऊपर मुल्ला बांग दे का बहरा होय खुदाय

इसी के साथ वे शक्ति को भी खुद के अंदर ही देखते हैं जब वे कहते हैं

हमारा यार है हममें, हमन को इन्तजारी क्या

यह प्रभाव भी योग परम्परा का दिखता है जब वचन में अक्खड़ता तथा अमायिकता आती है। इसके साथ ही वे भक्ति परम्परा मे आगे लिखते है.

लाली मेरे लाल की, जित देखूँ तित लाल
लाली देखन मै चला, मैं भी होगया लाल

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कबीर की वाणी मे यह धरपूँन मस्ती दिखती है, यह योग तथा भक्ति के समन्वय के कारण आई है

हम घर जारा आपना, लिया मुराड़ा हाथ
अब घर जारौं तासू का, ~~लिया मुरा~~
जो चलै हमारे साथ

यह योग मार्ग का प्रभाव दिखता है इसी प्रकार शुक्ल जी ने अभिजातयता की दृष्टिकोण से देखा तो कबीर की भाषा मे परिष्कृतता नही दिखी, हालांकि वे भाषा के नियम नही जानते थे लेकिन अनुभूति की कमी है।

कबीर एक समाज सुधारक, भक्त, कवि, योगमार्गी इत्यादि बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे यही कारण है उनकी बराबरी हिन्दी साहित्य मे आज तक कोई नही कर पाया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कामायनी के महाकाव्यत्व पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कामायनी आधुनिक काल का भावप्रधान महाकाव्य है। इसकी समीक्षा करते हुए नगेन्द्र ने 'कामायनी के अध्ययन की सीमाएँ' में एक लेख लिखा। जिसमें कामायनी के महाकाव्यत्व को निर्धारित किया जाएगा। जिसके प्रतिमान निम्न हैं-

(1) उदात्त उद्देश्य

रचना का उद्देश्य उदात्त होना चाहिए, यहाँ विषमता की समस्या पर विचार किया गया है जहाँ ज्ञान, क्रिया, इच्छा को मिलाने का प्रयास किया गया है। यही आज भी तार्किक है, जहाँ विज्ञान, राजव्यवस्था तथा समाज आपस से समान हो।

(2) उदात्त कथानक

कामायनी में बाह्य जीवन की कथाएँ ना के बराबर है। आन्तरिक जीवन की कथाओं के साथ दिनकर, मुक्तिबोध जैसे

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समीक्षक रसे महाकाव्य नहीं मानते। लेकिन प्रलय का आना, मनु का लगातार मन विचलित होना, श्रद्धा-इड़ा का संघर्ष इत्यादि रसके कथानक को उदात्त बनाते हैं और यह काव्य भी महाकाव्य के रूप में भावनात्मक रूप से है और भावना के लिए आन्तरिक वृत्तियाँ चाहिए।

(iii) उदात्त रस

कामायनी में शान्त रस, वीभत्स, शृंगार तथा आनंद रस को दिखाया है जिसमें शैवाद्वैतवादी आनंद रस को परिणति में दिखता है। यह रस रचना की दृष्टि से उदात्त है

समरस थे जड़ या चेतन, सुंदर साकार बना था
चेतना एक विलसती, आनंद अखण्ड घना था

आनंद रस सुख, दुख की भावना से परे है आगे की व्यवस्था है।

(iv) उदात्त चरित्र

रसमें चरित्रों की संख्या

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कम होने के कारण महाकाव्य मानने में समस्या होती है लेकिन अगर ~~छोटे या~~ कम चरित्रों का प्रयोग करके महाकाव्य बनाया जा सकता है तो समस्या हो क्या है।

(v) उदात्त शैली

यह रचना के शिल्प पर नजर डालता है। इस दृष्टि से कामायनी मे बिम्ब, अलंकार, रूपक इत्यादि व्यवस्थित है, प्रभाव उदात्त के रूप मे आता है।

कामायनी का महाकाव्यत्व की परम्परागत प्रतिमानों पर न रखकर आधुनिक प्रतिमानो का प्रयोग करके व्याख्या की जा सकती है। प्रसाद की कामायनी ने प्रतिमानों को निर्धारित किया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'हरिजन गाथा' कविता के मूल मंतव्य पर प्रकाश डालते हुए उसकी प्रासंगिकता का निर्धारण कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नागार्जुन जनकवि थे, वे आधुनिक समस्याओं पर प्रकाश डालते थे। बेलछी काण्ड मे जिस प्रकार उच्च जाति के लोगों द्वारा दलितों को जिंदा जला दिया था। उसके बाद हरिजनगाथा की रचना की गयी।

नागार्जुन स्वयं उच्च कुल के थे फिर भी वे दलितों की समस्या के प्रति जागरुक थे। तभी वे कहते है.

ऐसा तो कभी नही हुआ था
एक नही दो नही तीन नही
तेरह - तेरह के अभागे
अकिंचन मनुपुत्रों को
जिंदा झोंक दिया गया हो
अग्नि की विकराल लपटों मे

इसमें वे आगे बताते हैं कि यह योजना सोची-समझी थी क्योंकि पुलिस थाना ज्यादा दूर नही था फिर भी देरी से पहुँची।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

वे आगे के क्रम मे दलितो को अपने अधिकारो के लिए जागरूक करते थे, दलित ~~बाबा~~ माँ को समझाते है कि उनका बच्चा बागी होगा जो लोगो को एकजुट होगा। क्रांति के लिए हथियारो को एकजुट किया जाएगा। जिससे दलित जागृत होगा। वे कहते हैं

श्याम सलोना
यह अछूत शिशु
हम सबका उद्धार करेगा

इसको सामाजिक महत्व बनाने के लिए वे बच्चे की तुलना भी कृष्ण से करते हैं जिस प्रकार उन्होने माँ-बाप का उद्धार किया था। उसी प्रकार यह आपका करेगा।

प्रासंगिकता के तौर पर देखे तो आज भी NCRB की रिपोर्ट मे दलितो पर अत्याचार लगातार बढ़ रहे हैं, महिलाओ बलात्कार के मामले बढ़ रहे हैं; लगभग 80% दलित मैन्युअल स्कैवेंजर्स हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यह समस्या प्रशासनिक विफलता को दिखाती है, साथ ही महिलाएँ न्याय के लिए तड़प रही हैं यही कारण है यह रचना प्रासंगिक हो उठती है, वहीं समाधान के रूप में नागार्जुन द्वारा दिखाया गया रास्ता जिसमें दलितों को खुद हथियार उठाने होंगे अर्थात् संघर्ष को करना होगा। वे प्रत्यक्षतः आज कर भी रहे हैं और जारी भी है।

कई दलित रचनाकार स्वेदना के बल पर हरिजनगाथा पर आवाज उठाते हैं लेकिन ~~यह~~ उच्च कुल के होने के नाते भी यह रचना दलितों के प्रति समानुभूति से भरी रचना का कार्य करेगी।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) "नागार्जुन जनजीवन, धरती व मानव प्रेम के पुजारी हैं।" विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

नागार्जुन हिन्दी साहित्य के प्रबीणतम साहित्यकारों में से एक हैं जिन्होंने मिली विचारधारा में न बंधते हुए सामान्य जन-जीवन की समस्याओं को साहित्य मे उकेरा हैं। इसीलिए नागार्जुन को जन-जीवन, धरती तथा मानव प्रेम के पुजारी कहा जाता हैं।

नागार्जुन खुद के समय मार्क्सवाद, पूँजीवाद, कॉंग्रेस, जनता पार्टी इत्यादि से मोह ना रखते हुए सीधा मनुष्य की आवश्यकताओं पर ध्यान दिया हैं। वे लिखते हैं-

क्या हैं वाम, क्या हैं दक्षिण
जनता को रोटी से काम।

साथ ही साहित्यकार होने के कारण तत्कालीन सरकार के समक्ष प्रश्न भी खड़े ~~करती~~ करते हैं

लूटपाट के काले धन की रखवाली काली हैं दिल्ली
क्या पता दिल्ली की देवी काली हैं या गोरी हैं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नागार्जुन ने गरीबी, अकाल, भ्रष्टाचार जैसी समस्याओं का समाज पर प्रभाव को अपनी रचनाओं मे दिखाया है। इसमे से एक है- अकाल और उसके बाद

"कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनो तक भीत पर छिपकलियों की गश्त

यह पीड़ा नागार्जुन जैसा जनकवि ही उठा पाता है।

धरती के सन्दर्भ मे नागार्जुन ने बादल को घिरते देखा है, वे पहाड़ों से संबधित काव्य को अपना विषय बनाते है।

अमल धवल गिरि के शिखर पर
सच-सच बतलाना
रोते तुम थे यहाँ × ×

नागार्जुन नें अपने विषयों मे काफी व्यापकता ली हैं वें एकमात्र ऐसे कवि हैं, जो कटहल, मादा सूअर को कविता का विषय बनाते है। वस्तुतः भड़ रति

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

तो ऐसे विषय बनाने से खौफ खाते हैं वे सूअर को मादर ए हिन्द के नाम से पुकारते हैं। इसके साथ ही प्रकृति के अनेक विषयों को रचना में शामिल करते हैं।

मानव प्रेम मे नागार्जुन ने एक पिता-पुत्री के प्रेम को दिखाया है.

गियर पर टांग रखी है चूड़ियाँ
ड्राइवर है तो क्या हुआ
पिता तो है
एक सात साल की बच्ची का
पिता तो है।

इसके साथ ही मानव प्रेम के कारण ही वे स्वयं उच्च कुल मे होने के बावजूद हरिजनगाथा जैसी रचना करते हैं और हरिजनो को क्रान्ति के लिए आह्वान करते हैं-

श्याम सलोना यह
अछूता शिशु
हम सबका

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उद्धार करेगा।

नागार्जुन जनकवि थे, उन्होंने समाज में फैली कोई भी कुरीति हो, उसके खिलाफ आवाज उठाई, साथ ही नागरिकों के अधिकारों को सशक्त किया। तभी नागार्जुन को हिन्दी साहित्य का कबीर कहा जाता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) गोस्वामी तुलसीदास की 'रामराज्य की परिकल्पना' पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गोस्वामी तुलिदास ने अपनी रचनाओ रामचरितमानस तथा कवितावली में रामराज्य तथा कलियुग की परिकल्पना पेश की है। वे कलियुग से खुद के युग की तुलना करते हुए समस्याओं पर प्रश्न उठाते है, वही रामराज्य उनका यूटोपिया है। जिसे वे देखना चाहते है।

(1) रामराज्य एकदेशीय राज्य है, जिसमे सम्पूर्ण ब्रह्मण्ड का एकमात्र राजा पुरुषोत्तम श्रीराम हैं।

"भूमि सप्त सागर मेखला, एक्ल राज राजत राम

(2) तुलसीदास के रामराज्य मे सब व्यक्ति खुश है। वहाँ कोई बीमार नही है, ना ही किसी को कोई परेशान नही है।

दैहिक दैविक भौतिक तापा
राम राज्यहु काहु नहिं व्यापा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(iii) तुलसीदास के अनुसार कलियुग में वर्णाश्रम का परित्याग हो रहा था, वहीं रामराज्य मे वर्णाश्रम धर्म का पालन हो रहा है। सभी लोग स्वधर्म को समझकर काम कर रहे हैं।

(iv) पारिवारिक व्यवस्था में समन्वय

सीता माता तीनो सासों को बराबर मानकर पूजा कर रही हैं, वही राम को राजा बनने पर आत्मग्लानि हो रही है कि यह अनुचित है। इस तरह का पारिवारिक समन्वय रामराज्य मे दिखता है:-

भोजन शयन केलि लरकाई, बन्धु बिहार बडे अभिषेकू
यह तो अनुचित एकौ, एकल राज करे राम।

(v) अकाल, निर्धनता इत्यादि का न होना

राम राज्य मे कलियुग के विपरीत जहाँ कलि बार दुकाल पडे बिन अनु सब दुखी लोग मरे के विपरीत कोई अकाल की परिस्थितियाँ नही है। यहाँ सभी लोग समानता, शान्ति

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के साथ जीवन व्यतीत कर रहे हों।

(v) पुरुष - नारी की समानता

राम राज्य की अवधारणा में पुरुष-पत्नी दोनों समान अधिकारी हैं। दोनों के बराबर अधिकार हैं।

राम भगति रत नर ~~अरु~~ नारी
सकल परमगति के अधिकारी

(vi) प्रजा व राजा में समन्वय

रामराज्य मे राजा प्रजा के प्रति तथा प्रजा राजा के प्रति संवेदनशील हो गई हैं, और प्रजा का कल्याण करना ही राजा का कर्तव्य हो गया है।

सोई प्रियतमम मम सोई × ×
× × ×

रामराज्य की अवधारणा तुलसीदासजी का पुरोधिया था, जिसे वे लाना चाहते थे। आज भी भारतीय समाज मे कुछ ऐसी ही विशेषताओं को प्राप्त करने के लिए प्रयास कर रहा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) ''ब्रह्मराक्षस' अस्तित्ववादी मान्यताओं और खंडित व्यक्तित्व का प्रतीक है।' आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ब्रह्मराक्षस मुक्तिबोध की प्रसिद्ध कविता है 'जो ऑद का मुट टेढ़ा है' संकलन मे शामिल है। इसमें ब्रह्मराक्षस के रूप मे तथा ब्रह्मराक्षस के शिष्य के रूप में खुद मुक्तिबोध हैं

अस्तित्ववाद का अर्थ है - खुद के निर्णयों को खुद से लेना। अगर खुद के निर्णय ना होकर दूसरों से प्रभावित होकर लिया तो वे निर्णय गलती का शिकार होती हैं। कुछ ऐसी ही हालात ब्रह्मराक्षस की है। उसका मन आत्मचेतस तथा विश्व चेतस होने के लिए संघर्षशील है -

आत्मचेतस किंतु
व्यक्तित्व मे थी प्राणमय अनबन
विश्वचेतस बेबनाव

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसी मान्यताओं के पथ पर उसका जीवन संघर्षशील होता है और उसकी हालात दयनीय हो जाती है। वह बुद्धि से पूँजीवादी व्यवस्था का समर्थक होता है, वही हृदय से सभी के लिए समान व्यवस्था चाहता है जिसे मुक्तिबोध ने दिया है-

किन्तु युग बदला
आया कीर्ति व्यवसायी
लाभकारी कार्य में से धन।

इस समय उसकी मानसिक स्थिति का वर्णन या यूँ कहें खंडित व्यक्तित्व की स्थिति का वर्णन ब्रह्मराक्षस ने दिखाया है कि कैसे एक कमरे मे वह संघर्ष कर रहा है-

खूब ऊँचा एक जीना साँवला
उसकी अंधेरी सीढ़ियाँ
वे एक आभ्यंतर लोक की तरफ
× × × × ×

इस संघर्ष मे वह लगातार संघर्ष करता है। तारतम्य स्थापित न होने के कारण उसका अन्त

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हो जाता है। मुक्तिबोध लिखते हैं:

> पिसा जाता वह दो पाटों के बीच
> ऐसी ट्रेजिडी है - नीच।

यही ब्रह्मराक्षस आस्तित्ववादी मान्यताओं में विरोध होने पर खण्डित व्यक्तित्व को दिखाता हैं, कि कैसी परिस्थितियों में आकर ब्रह्मराक्षस का अन्त होता है।

हालांकि जब कविता आगे बढ़ती हैं तो कामायनी के मनु की समस्या जैसी विषमता का बोध भी सामने आता हैं जहाँ भाव, तर्क, सामंजस्य नहीं हो पाता है।

हम कह सकते हैं ब्रह्मराक्षस कविता में मुक्तिबोध ने व्यक्तित्व खण्डन की परिस्थितियों को दिखाया हैं, जिसे मोहन राकेश की परम्परा वालें समीक्षकों ने सराहा है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये: **10 × 5 = 50**

(क) नीकी दई अनाकनी, फीकी परी गुहारि।
तज्यौ मनौ तारन-बिरदु बारक बारनु तारि।।

प्रसंग

प्रस्तुत पद्य रीतिकालीन कवि बिहारीलाल की 'बिहारी सतसई' से उद्धृत है।

सन्दर्भ

बिहारी रीतिसिद्ध कवि थे, वे दरबारी माहौल में रचना करते हैं। लेकिन यहाँ वे भक्ति काव्य से संबंधित पद की रचना करते हैं और भगवान को स्वयं के उद्धार के लिए कहते हैं।

व्याख्या

बिहारी कहते हैं। हे भगवान मैं कितनी प्रार्थना कर चुका, आप मेरा कल्याण क्यों नहीं करते। आप मेरी पुकार की उपेक्षा क्यों करते हो। आपने एक बार एक हाथी का कल्याण किया था। मुझे लगता है उसके बाद

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

आपने त्याग करना छोड़ दिया। नहीं तो आप मेरा त्याग अवश्य करते।

विशेष

① पद्यांश में ब्रज भाषा का सुंदर उपयोग किया है।

② बिहारी रीतिसिद्ध परंपरा होने के बाद भी भक्ति से संबंधित पद है।

③ विभावना अलंकार का प्रयोग हुआ है।

④ बिम्बधर्मी भाषा का प्रयोग हुआ है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) भर भादौं दूभर अति भारी। कैसें भरौं रैनि अँधियारी।
मँदिल सून पिय अनतै बसा। सेज नाग भै धै धै डसा।
रहौं अकेलि गहें एक पाटी। नैन पसारि मरौं हिय फाटी।
चमकि बीज घन गरजि तरासा। बिरह काल होइ जीउ गरासा।
बरिसै मघा झँकोरि झँकोरी। मोर दुइ नैन चुवहिं जसि ओरी।
पुरबा लाग पुहुमि जल पूरी। आक जवास भई हौं झूरी।

प्रसंग
प्रस्तुत पद्यांश सूफी काव्य के प्रतिनिधि कवि जायसी की 'पद्मावत' से लिया गया है।

सन्दर्भ
जायसी ने बारहमासा विरह का वर्णन किया है जो लोकतत्व मे शामिल है। भाद्रपद महीने मे नागमती के वियोग से सन्दर्भित है।

व्याख्या
रानी नागमती वियोग मे है उसे भाद्रपद मे बिना रत्नसेन के काफी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। जब अंधकारयुक्त रात को बारिश होती है तो उसे नींद नहीं आती है और काले नाग की भाँति उसे धीरे-धीरे यह खा रहा है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जैसे ही मैं सोने की कोशिश करती हूँ मेरा हृदय फट जाता है साथ ही आकाश मे बिजली चमक रही है। धीरे-धीरे बरसात हो रही है। जिस प्रकार बादलों से वर्षा हो रही है, उसी प्रकार विरह से मेरी आँखे भी पानी से या अश्रु से भर आई है। वर्षा से पूरी जमीन/धरती भीग चुकी है, उसी प्रकार मैं भी दुखी हो चुकी हूँ।

विशेष

1. संस्कृत साहित्य की तरह बारहमासा वर्णन का प्रयोग किया है।
2. ठेठ अवधी का प्रयोग किया है। इसकी भाषा की सुन्दरता को शुक्ल जी ने भी सराहा है।
3. वियोग को शुक्ल जी की भाषा ने नागमती का वियोग हिन्दी साहित्य की अद्वितीय वस्तु है।
4. लोक तत्वों का प्रयोग किया है।
5. पुहमी जैसी पूर्वी प्रयोग किए है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) बिन गोपाल बैरिन भई कुंजैं।
तब ये लता लगति अति सीतल, अब भई विषम ज्वाल की पुंजैं।।
बृथा बहति जमुना, खग बोलत, बृथा कमल फूलैं, अलि गुंजैं।
पवन पानि धनसार सँजीवनि दधिसुत किरन भानु भइ भुंजैं।।
ए, ऊधो, कहियो माधव सों बिरह कदन करि मारत लुंजैं।
सूरदास प्रभु को मग जोवत अँखियाँ भई बरन ज्यों गुंजैं।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत पद्यांश सूरदास जी की भ्रमरगीत से लिया गया है। भ्रमरगीत उपालंभ काव्य है जिसमें गोपियाँ उद्धव के शुष्क ज्ञानमार्गी के विरुद्ध श्री कृष्ण के प्रति प्रेम को स्थापित कर रही हैं। पद्यांश में भी ऐसा ही प्रयास है।

गोपियाँ उद्धव से कहती हैं आपको पता है हमारा जीवन श्रीकृष्ण के बिना कितना कष्टकारी हो गया है। आज न तो हमारे पास कुंज हैं जहाँ हम विराजमान होते थें। उस समय ये लता अतिशीतल लगती थी, बहती जमुना, बोलते पक्षी, कमल फूल की खुशियाँ इत्यादि सब अच्छे लगते थे अर्थात् हमारा जीवन एकदम सही था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लेकिन आज शीतलता प्रदान करने वाली वायु, जल, कपूर, बादल इत्यादि हमें जला रहे हैं। हे उद्धव आप जाकर उन्हें समझाइए कि उनके बिना हम जीवित मृत्त तुल्य हो गए हैं। वे यहाँ आकर हम सबका उद्धार करें। उन्हें बताइएगा कि उनकी राह-~~राह~~ देखते-देखते हमारी आँखें दुख गई हैं और लाल हो गयी हैं।

__विशेष__

① गोपियों के वाक्य में भाव प्रेरित वक्रता दिखाई पड़ती है।

② शुद्ध ब्रज भाषा का प्रयोग किया है।

③ विरह की दशा का वर्णन किया है।

④ प्रकृति को समावेशित कर पद रचा गया है।

⑤ 'वृथा बहति जमुना' में अनुप्रास अलंकार है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) दसरत्थ के दानि-सिरोमनि राम, पुरान प्रसिद्ध सुन्यो जसु मैं।
नरनाग सुरासुर जाचक जो तुम सों मनभावत पायो न कैं।
'तुलसी' कर जोरि करै बिनती जो कृपा करि दीनदयाल सुनैं।
जेहि देह सनेह न रावरे सों अस देह धराइ कै जाय जियैं।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत पद्यांश तुलसीदास के कवितावली से लिया गया है। तुलसी जी रामभक्ति काव्यधारा के कवि हैं। कवितावली मे वे खुद का उद्धार करने के लिए राम को पुकार रहे हैं। इसी सन्दर्भ मे ये पंक्तियाँ हैं।

तुलसी कहते हैं, हे! दशरथ पुत्र दान शिरोमणि जिनके बारे मे पुराणों मे भी कहा गया है। साथ ही नर, नाग, देवता, असुर सबको तुम प्यारे लगते हो। यह तुलसीदास तुमसे विनती करता है, हे दीनदयाल हमारी विनती सुनिए आप मुझ पर कृपा कीजिए। अगर इस देह पर आपका प्रेम प्राप्त नही हो रहा है, तो फिर जीने का क्या

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

फायदा। आप भारत और मेरा उद्धार कीजिए।

विशेष

(1) तुलसी ने ब्रजभाषा का प्रयोग किया है।

(2) 'दीनदयाल' उपमा अलंकार का प्रयोग किया है।

(3) नाग के रूप में प्रयोग का समस्त भूधरा का स्वामी राम को बताया है।

(4) पश्चिमी - पूर्वी प्रयोग भाषा में किए है।

(5) दानि - सिरोमणि में प्रतीकों का प्रयोग हुआ है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) जिन श्रेष्ठ सौधों में सुगायक श्रुति-सुधा थे घोलते,
निशि-मध्य, टीलों पर उन्हीं के आज उल्लू बोलते!
"सोते रहो हे हिन्दुओ! हम मौज करते हैं यहाँ,"
प्राचीन चिह्न विनष्ट यों किस जाति के होंगे कहाँ?

प्रस्तुत पंक्ति आधुनिक युग की नवजागरण करने वाली कविता भारत-भारती से ली गई है, जिसकी रचना 1912 में ~~शुक्ल~~ गुप्त जी ने की है।

गुप्त जी ने वर्तमान विश्लेषण में परिस्थितियों को बताया है कि कैसे भारत ~~के~~ गर्त में जा रहा है।

गुप्त जी कहते हैं जिन पर्वतों पर जड़ी-बूटियाँ लगती थी, उनका उपयोग महर्षि मुनि औषधियाँ बनाने के लिए करते थे। वहाँ आज रात को उल्लू बोलते हैं। हे हिन्दुओ! अगर हम अब भी सोते रहे तो हमारा विनाश निश्चित है। अगर यह सब कुछ नष्ट हो गया तो हम किस को

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अपना कहेंगे। यह विरासत हमारी खोती जा रही है।

विशेष

(1) नवजागरण के लिए वर्तमान की समस्याओं का विश्लेषण किया है।

(2) इतिहास के प्रति रोमानी बोध दिखता है।

(3) 'हिन्दुओ' के प्रयोग से रचना समीक्षकों के सामने अखरती है।

(4) खड़ी बोली का काव्य है।

(5) दृढ़ता जैसे नैतिक मूल्य का बोध होता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) सूर की काव्य-कला के वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सूरदास भक्ति काल में कृष्ण काव्यधारा के कवि हैं। उन्होंने कृष्ण की लीला को भ्रमरगीत में संजोया है। जिसमें कृष्ण के वात्सल्य, साख्या तथा विरही गोपियों से जुडे पद शामिल हैं।

सुर की काव्य कला का वैशिष्ट्य

① कथारूप भ्रमरगीत न तो प्रबंध, न ही मुक्तक। हालांकि इसमे रस का अतिरेक हैं। कृष्ण के जन्म से मथुरा जाने की कहानियाँ तथा उसके विरह में गोपियों की वेदना हैं जब उद्धव शुष्क ज्ञान मार्गी उपदेश देता हैं तो गोपियाँ उपालम्भ के रूप में उद्धव पर तीक्ष्ण बाण चलाती है।

② भाषा सूरदास ने भाषा मे निहित कल्पनात्मकता तथा संगीतमय भावना लाने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के लिए ब्रज भाषा को चुना। उनकी भाषा सौन्दर्य पर शुक्ल जी कहते है-

"चलती हुई ब्रजभाषा का पहला काव्य इन्हीं का जान पड़ता है जो इतनी पूर्णता के कारण आश्चर्य मे डाल देता है।"

सूरदास ने ब्रज भाषा मे कई पूर्वी प्रयोग (गोंड़) भी किए गए है साथ ही पंजाबी मिश्रण भी किया है।

उर मे माखन चोर गड़े
अब कैसेहु निकसत नाहिं तिरछे ह्वै जु अड़े।

सूरदास की भाषा पर द्विवेदी जी ने भी कहा है कि 'सूरदास से सीखना चाहिए कि कैसे छोटे-छोटे पदों में जमकर भाव डालते है।

(iii) वक्रता तथा वाग्विदग्धता

शुक्ल जी ने बुद्धिप्रेरित वक्रता के स्थान पर भावप्रेरित वक्रता को महत्व दिया है, वही भावप्रेरित वक्रता शुक्ल जी के यहाँ दिखती है जो सीधे पाठक को प्रभावित

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

करती है।

" भली करी तुम आए
लादि खेप गुण ज्ञान की जो ब्रज मे आए
उतारे।

(iv) बिम्ब योजना

सूरदास को बिम्ब सम्राट कहा जाता है। बिम्ब युक्त भाषा पाठक के आन्तरिक चित्र को बनाती है जिससे पाठक महसूस कर पाता है। शुक्ल जी ने भी कहा है

" काव्य अर्थग्रहण में बिम्ब अपेक्षित होता है। "

सूरदास ने कृष्ण के बचपन मे वात्सल्य के रूप मे बिम्ब को प्रस्तुत किया है। ये लक्षित बिम्ब, उपलक्षित बिम्ब, श्रव्य बिम्ब इत्यादि के साथ थे।

मुख दधि लेप किए
धुटरुनि चलति रेणु तन मंडित

मैया कबहि बढ़ैगी चोटी
किती बार मोहि दूध पियत भई, यह अजहूँ है छोटी

(v) अलंकार योजना

किसी रचना के आभूषण होते है, अलंकार।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सूरदास जी नें शब्दालंकारो तथा अर्थलंकारो दोनों का भरपूर प्रयोग किया है।

रूपक

काहे को रोकत मारग सुधो

× × × × × ×

सांगरूपक

आयो घोष बड़ो व्यापारी

लादि खेप गुण ज्ञान की जो ब्रजमे आन उतारी

(vi) संगीतात्मकता

सूरदास की ब्रजभाषा संगीतात्मकता से युक्त है जिसे पढ़कर पाठक मोहित हो जाता है। इसकी प्रशंसा शुक्ल जी तथा द्विवेदी जी ने की है।

सूरदास जी भाषा प्रवीण कवि थे, साथ ही काव्य सौन्दर्य के अन्य पक्षों पर भी ध्यान देते थे हालांकि कई जगह अलंकार का प्रयोग बहुतायत के कारण उन्हें आलोचना का सामना करना पड़ा है। अन्यथा उनका शिल्प उत्कृष्ट है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) बिहारी की बिंब-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बिहारी रीतिसिद्ध कवि थे। उन्होंने लक्षण ग्रंथ परम्परा का तो पालन नही किया लेकिन दरबारी कवि होने के नाते कविता को साध्य माना। उनकी हर पद एक चित्रभाषा के रूप मे दरबार के माहौल को आनन्दित करता था।

बिम्ब आधुनिक समीक्षा का प्रतिमान है। फ्लिन्ट ने बताया हैं। बिम्ब निर्माण से पाठक के आन्तरिक मन मे चित्र बनने लग जाते हैं। बिहारी के यहाँ भी ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं। ऐसा ही एक उदाहरण देखते है -

कहत नटत रिसत खिसत मिलत लजियात
भरे भोहनु बे करत है, नेननु ही सो बात

उपरोक्त दोहा मे नायक- नायिका की चेष्टाओं का वर्णन मिलता है जिससे दरबार के सभी लोग आकर्षित हो जाते है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

बिहारी ने स्वयं अपने रचना पदों का उद्देश्य रस उत्पत्ति को बताया है। बिहारी कहते हैं:-

तंत्रीनाद कवित्त रस, सरस राग रति रंग
अनबूड़े बूड़े तिरे जे बूड़े सब अंग।

बिहारी ने बिम्बधर्मी पदों का प्रयोग श्रृंगारिक चेतना या दरबारी माहौल के लिए ही नहीं किया। उन्होंने कई बार सामाजिक चेतना के लिए बिम्बों का प्रयोग किया है:-

अति पराग, मधुर मधु, नहि विकास इहि काल
अली कली ही तो बंध्यौ, आगे कौन हवाल

इसमें राजा को उसके उद्देश्य तथा धर्म के बारे मे बताया है।

वस्तुत: बिहारी की बिम्बभाषा के पीछे कारण थे- उनमे से एक था कि वे दरबारी कवि थे, दरबारों मे रसिकों में धैर्य भी कम होता था जिससे बिम्ब धर्मी भाषा के प्रयोग से लिपटल कर सके।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दूसरा बिहारी अनुभावकेन्द्रित कवि हैं। वे अनुभावों के माध्यम से अपनी कविताओं को प्रस्तुत करते थे। रस निष्पत्ति की प्रक्रिया में बिम्ब अच्छा कार्य करते हैं।

बिहारी ने लक्षित बिम्ब तथा उपलक्षित बिम्ब दोनों का प्रयोग किया है, जिन्हें उदाहरण से देखते हैं-

बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय
सौंह करे भौंहनु हँसे, दैन कहे नटि जाय।

लक्षित बिम्ब को आसानी से बना सकते हैं, वहीं उपलक्षित बिम्ब के लिए अमूर्त भावों का प्रयोग करते हैं।

हम कह सकते हैं रीतिकालीन रीति सिद्ध कवियों में बिहारी बिम्ब प्रयोग में सर्वश्रेष्ठ कवि हैं, उनकी बराबरी भक्तिकाल में सूर तथा आधुनिक काल में निराला ही कर सकते हैं। तभी तो ग्रियर्सन ने कहा है-

"बिहारी जैसा दूसरा कवि पूरे यूरोप में नहीं मिलता है।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) संवदेना के धरातल पर 'भारत-भारती' की सीमाओं को रेखांकित कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मैथिलीशरण गुप्त द्वारा 1912 में ~~भारती~~ भारत-भारती की रचना की गई थी। यह रचना उनके राष्ट्रवादी दौर की थी। इसके बाद उन्होंने प्रणयन, साकेत, यशोधरा इत्यादि की भी रचना की लेकिन उनकी महत्वता भारत-भारती के कारण अधिक रही।

भारत-भारती की संवेदना को समझे तो यह प्रस्तुत करती है कि हम अतीत में कैसे थे, वर्तमान मे क्या स्थिति है तथा भविष्य मे क्या होगे।" इसी स्तर पर संवेदना का निर्माण हुआ है।

इस संवेदना धरातल पर समीक्षको ने कई प्रश्न उठाए है जिनमें कुछ बिन्दुवार निम्न है-

① आर्य-अनार्य / हिन्दू-मुस्लिम विवाद

भारत-भारती मे कई जगह गुप्त जी ने लिखा है- "वे आर्य ही थे जो अपने लिए जीते न थे"। इससे आर्य-अनार्य का

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विवाद उत्पन्न होता है। साथ ही मुद्र तथ जनजाति इस संवेदना से मेल नहीं खाती है।

वही रचना में गुप्त जी ने लिखा है:

"निष्ठुरो के प्रयास से हुई देवमूर्तियाँ खण्डित
मूर्तियों से सजने लगी मस्जिदें

यह गंगा जमुना तहज़ीब के विरुद्ध जान पड़ता है। इनका जवाब जिस प्रकार भारतेन्दु ने हिन्दू पर मे दिया था। उसी प्रकार उन्होंने भी दिया है। वहीं गुप्त जी ने अकबर को महान शासक माना है। साथ ही कहा है:

साथ सब सप्रेम मिलकर चलो, यात्रा सुखद होगी तभी
पीछे हुआ जो हो गया, अब आगे देखो सभी।

(2) गुप्त जी पर इतिहास का प्रयोग रोमानीयुक्त प्रयोग करने का आरोप भी लगता है। उन्होंने भारत खण्ड मे ऐसा प्रयोग किया है, हालांकि उन्होंने स्वयं कहा है कि नवजागरण के लिए यह करना आवश्यक था।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(3) अंग्रेजों के प्रति कटाक्ष नहीं

गुप्त जी ने अंग्रेजी राज की प्रशंसा की। हालांकि धन बहिर्गमन तथा आयात-निर्यात पर तीखा वार किया हैं। लेकिन 18वी शताब्दी के अन्तिम 25 वर्षों मे 20 बार अकाल पड़ा। उसका सीधा मार्ग ब्रिटिश व्यवस्था थी। ऐसा नहीं बताया। हालांकि इसके पीछे उन्हें अपनी रचना को प्रतिबंध से बचाना था।

(4) आंदोलन का वर्णन नहीं

स्वदेशी आंदोलन के दौरान लिखे जाने पर तत्कालिक घटनाओं का वर्णन न के बराबर था

(5) जाति व्यवस्था पर

गुप्त जी ने तात्कालिक समाज मे फैल रही जाति व्यवस्था जैसी कुरीतियों कों रचना में शामिल नहीं किया।

भारत-भारती आधुनिक साहित्य में प्रबोधन का काव्य हैं। इसे पढ़ने के लिए दक्षिणी भारत में हिन्दी सीखी गई थी। हालांकि लोंजाइनस के अनुसार महानता मे कुछ छिद्र तो रह जाते है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) पद्मावत अन्योक्तिपरक अर्थ धारण करने वाली रचना है या समासोक्तिपरक? विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) नागमती के विरह-वर्णन को मध्यकालीन नारी की दासता का चित्रण कहना कहाँ तक उचित है? अपना मत दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'राम की शक्तिपूजा' के भाषिक-सौंदर्य पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) 'असाध्य वीणा' 'सृजन तत्त्व' की गहन व्याख्या करने वाली कविता है'- इस कथन के परिप्रेक्ष्य में इस कविता पर विचार कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) भारत-भारती में निहित नवजागरण-चेतना पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'सृजनात्मक रहस्यवाद' के परिप्रेक्ष्य में 'असाध्य वीणा' कविता की अंतर्वस्तु का अवगाहन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation